More abhilashadhar9@gmail.com New Post Design Sign Out

Unseen India

W

Wednesday, 23 January 2019

प्रयागराज कुंभ

कुंभ का नाम आते ही इलाहाबाद की पवित्र भूमि पर बहती गंगा यमुना की अविचल धारा, आस्था, श्रध्दा ,विश्वास का आध्यात्मिक मेला सचित्र जीवंत हो उठता है। कहीं राम नाम की धुन तो कहीं गायत्री यज्ञ ,कहीं नागा साधुओ की रहस्यमय जीवनशैली तो कहीं भगवत कथा , कहीं संगम पर आस्था की डुबकी लगाते

Wikipedia

W

श्रद्धालु तो कहीं निस्वार्थ भाव से श्रद्धालुओं को भोजन कराते भक्तजन । सद्भावना ,सहयोग ,मानवता का अद्भुत मेला है यह।

अप्रवासी पक्षी।

यूं तो इन्हे अप्रवासी पक्षी कहा जाता है । ये पक्षी साइबेरिया से यहां आए और अब संगम ही इनका ठिकाना है । कुंभ में आए श्रद्धालुओं का स्वागत ये मेजबान की तरह करते हैं। संगम में नाव से भ्रमण करते श्रद्धालुओं कि नाव पर छा जाते है तो कभी हथेलियों पर रखे सेव पर चोंच मारते है और कल्पवासी भी इनके साथ खेलने में मग्न हो जाते हैं। रात्रि में इन पक्षियों की जलक्रीड़ा कल्पवासियों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

शाही स्नान

कुंभ का शाही स्नान मकर संक्रान्ति से प्रारंभ होकर महाशिवरात्री तक चलता है। यूं तो कल्पवासी प्रतिदिन संगम में स्नान करके पूजा आराधना करते हैं और बहुत सी स्नान की महत्वपूर्ण तिथियां भी होती हैं पर

Unseen India

Search

Follow by Email

Email address... Submit

Home

About Me

Najaria.blogspot.com

View my complete profile

Report Abuse

Blog Archive

January 2019 (1)

June 2018 (1)

मुख्य रूप से चार शाही स्नान होते हैं। इन शाही स्नानों में मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी तथा महाशिवरात्रि प्रमुख हैं। शाही स्नान करने के लिए सर्वप्रथम संतो तथा नागा साधुओं के अखाड़े निकलते हैं।संतो के स्नान के पश्चात सभी श्रद्धालुओं द्वारा संगम स्नान किया जाता है।

कुंभ में दान की परम्परा

प्रयाग कुंभ में दान का भी बहुत महत्व है, मान्यता है कि कुंभ में संगम के तट पर दिए गए दान का फल जन्म जन्मांतर तक दानकर्ता को कई गुना होकर प्राप्त होता है । कुंभ में दिए जाने वाले प्रमुख दान गोदान ,गुप्तदान, अन्नदान , फलदान, तांबुलदान , वेणी दान, तिलदान ,शैयादान, महाकल्पलतादान, धरादान इत्यादि हैं। राजा हर्षवर्धन कुंभ में दान करने आते थे। यूं तो कुंभ सदैव ही आस्था का मेला रहा है पर 2019 का सिंहस्थ कुंभ कुछ अन्य कारणों से भी विशेष है ।444 वर्ष बाद प्रयागराज ने अपने प्राचीन नाम को अपनाया अतः इस बार सिंहस्थ कुंभ प्रयागराज में लगा। यूनेस्को ने कुंभ मेले को "मानवता के अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में" मान्यता दी।कुंभ मेले को वैश्विक पहचान देते हुवे 172 देशों के राजदूतों ने अपने देश का झंडा कुंभ क्षेत्र में लगाया। मानवता , सौहार्द्र , आस्था , विश्वास ,श्रद्धा का संगम सदैव कुंभ की नगरी में सजता रहेगा और हम सब इसके साक्षी होंगे।

धन्यवाद्

---

at January 23, 2019 4 comments:

Thursday, 7 June 2018